पठार जनजातीय की शिक्षा की स्थिति और समस्याएं एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

राकेश भेदी

https://doi.org/ 10.61410/had.v21i2.300

Abstract

Education is a fundamental requirement for the development of any individual and family. Without education, a person cannot establish himself or herself as a successful individual in society. Therefore, the present study attempts to examine the educational status and problems of students belonging to the Padhar tribal community residing in the Nalkantha region. The main objective of this study is to understand the socio-economic conditions behind school dropout among students, the dropout rate, various educational problems, parents' attitudes toward education, and the realities of the social environment. Thereafter, research methodology and various research techniques and methods have been employed. In addition, a review of previous studies and a presentation of the study area have been included. Primary data were collected from the respondents covered under the study through personal interviews and face-to-face interactions. An attempt has been made to classify and analyze the collected information. Furthermore, the findings of the study have also been included, such as the fact that the dropout rate in the Padhar tribal community is very high. To reduce this dropout rate, various aspects of the Padhar tribal community should be incorporated into the curriculum to make it more attractive. In addition, the attitude of parents toward education in the Padhar community is found to be predominantly negative (about 80%). Thus, this study clearly indicates that it is a highly reliable source for understanding Padhar tribal students, through which an authentic picture of the social, economic, cultural, and overall educational institutions of the tribal community can be obtained.

Keywords: ; ***Padhar Students, Educational Status, Tribal, Community, Dropout Rate, Problems***

सारांश

शिक्षा किसी भी व्यक्ति और परिवार के विकास के लिए एक मूलभूत आवश्यकता है। शिक्षा बिना व्यक्ति समाज में खुद को एक सफल व्यक्ति के रूप में स्थापित नहीं कर सकता। इसीलिए प्रस्तुत अध्ययन में नलकांठा क्षेत्र में निवास करने वाले पढार जनजातीय समुदाय के छात्रोमें शिक्षा की स्थिति और उनकी समस्याओं की जांच करने का प्रयास किया गया है।

- **Assistant Professor: Department of Sociology, Saurashtra University, Rajkot**

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छात्रोके स्कूल छोड़ने के पीछे की सामाजिक आर्थिक स्थिति तथा ड्रॉपआउट दर शिक्षा की विभिन्न समस्याएं छात्रोकी शिक्षा के प्रति माता.पिता का दृष्टिकोण और सामाजिक वातावरण जैसी वास्तविकताओं को जानना है। इसके बाद अनुसंधान कार्यप्रणाली तथा अनुसंधान की विभिन्न प्रविधियों और पद्धतियों का उपयोग किया गया है। साथ ही पूर्व में हुए अध्ययनों की समीक्षा और अध्ययन क्षेत्र आदि की प्रस्तुति की गई है।

अध्ययन के अंतर्गत आने वाले उत्तरदाताओं से व्यक्तिगत साक्षात्कार रूबरू मुलाकात करके प्राथमिक आंकड़े एकत्र किए गए हैं। एकत्र की गई जानकारी का वर्गीकरण और विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त अध्ययन के निष्कर्षों को भी शामिल किया गया है जैसे कि पढार जनजातीय समुदाय में ड्रॉपआउट दर बहुत अधिक है। इस ड्रॉपआउट दर को कम करने के लिए पाठ्यक्रम में पढार जनजातीय समुदाय के विभिन्न पहलुओं को शामिल करके पाठ्यक्रम को आकर्षक बनाना चाहिए। इसके अलावा पढार समुदाय में शिक्षा के प्रति अभिभावकों मातापिता का दृष्टिकोण अधिकांशत 80% नकारात्मक देखने को मिलता है अतः यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि पढार जनजाति छात्र के लिए अत्यंत विश्वसनीय स्त्रोत है जिनके माध्यम से जनजाति समुदाय की सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक समग्र शिक्षा संस्था का प्रमाणिक चित्र प्राप्त होगा।

मुख्य शब्द : पढार छात्र, शिक्षा की स्थिति, जनजातीय, समुदाय, ड्रॉपआउट दर, समस्याएं

प्रस्तावना

भारतीय समुदाय विभिन्न प्रजातीय समूहों का निवास स्थान रहा है। भारतीय समुदाय में विविधता व्याप्त है। भारतीय जनजातीय समुदाय ऐसे हैं जो अपनी अलग पहचान और विविधता रखते हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार देश की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत हिस्सा आदिवासियों का है। भारत के संवैधानिक ढांचे में सामाजिक न्याय और समानता के सिद्धांतों को स्वीकार किया गया है लेकिन भौगोलिक विविधता आर्थिक पिछड़ेपन और सांस्कृतिक विशिष्टताओं के कारण कुछ जनजातीय समुदाय अभी भी विकास की मुख्यधारा से कटे हुए हैं। इनमें गुजरात राज्य में पांच आदिम विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समुदाय निवास करते हैं जैसे कि कोलघा कोतवालिया सीदी काथोडी और पढार जनजातीय। प्रस्तुत अध्ययन गुजरात के नलकांठा क्षेत्र में निवास करने वाले पढार आदिवासियों के छात्रोकी शिक्षा की स्थिति और उससे जुड़ी समस्याओं के समाजशास्त्रीय अध्ययन पर केंद्रित है जहाँ शुरुआत से ही आजीविका के साधनों का अभाव देखा गया है। इसके परिणामस्वरूप पढार जनजातीय समुदाय आज भी गरीबी बेरोजगारी अंधविश्वास निम्न जीवन स्तर और निम्न स्वास्थ्य स्तर जैसी समस्याओं से जूझ रहा है।

पढार जनजातीय लोगों की समस्याओं में शिक्षा मूल रूप से एक मुख्य समस्या है शिक्षा के अभाव ने उनके संपूर्ण जीवन को प्रभावित किया है। शिक्षा के अभाव के परिणामस्वरूप उनके परिवारों में धार्मिक मान्यताओं और अंधविश्वासों को आसानी से देखा जा सकता है। जैसे किए किसी पढार परिवार में सामाजिक अवसरों पर आवश्यकता से अधिक शराब या व्यसन का सेवन करके स्वास्थ्य का स्तर अत्यंत खराब कर लेनाए प्राथमिक स्वास्थ्य के लिए भुवा भगत पारंपरिक उपचार पद्धतियों पर विश्वास करना अपने घरों में स्वच्छता पर ध्यान न देना प्रतिदिन स्नान न करना खानपान में सफाई का अभाव होना तथा उद्देश्यहीन जीवन जीना और समय के मूल्य को न समझना जैसी विशेषताएं उनकी दैनिक दिनचर्या में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। ये सभी कारण उनकी शिक्षा में बाधक बनते हैं। यदि उनके शिक्षा के स्तर को सुधारने में सफलता मिलती है तो उनकी अधिकांश समस्याएं स्वतः ही दूर हो जाएंगी।

सरकार द्वारा पढार जनजाति की शिक्षा के विकास के लिए जब से विशेष पिछड़ी जनजाति के रूप में संवैधानिक व्यवस्था की गई है तब से निरंतर विभिन्न योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया हैए लेकिन क्या उनके शिक्षा के स्तर में कोई परिवर्तन या बदलाव आया है वर्तमान समय में प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रे हाई स्कूल के स्तर तक पहुँचते पहुँचते कम होते जाते हैं। इसीलिए प्रस्तुत अध्ययन में पढार जनजातीय समुदाय के छात्रोकी शिक्षा की स्थिति और उनकी समस्याओं की जांच करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं

- पढार जनजातीय समुदाय के लोगों की सामाजिक.आर्थिक स्थिति की जांच करना।
- पढार जनजातीय छात्र की शिक्षा की स्थिति और उनकी समस्याओं को जानना।
- आधुनिक शिक्षा के प्रति पढार समुदाय के लोगों के दृष्टिकोण को जानना।

संदर्भ साहित्य की समीक्षा

किसी भी शोध कार्य को वैज्ञानिक विश्वसनीयता और वर्गीकरण प्रदान करने के लिए वर्तमान शोध पर पूर्व में हुए अध्ययनों का अध्ययन करना अनिवार्य है। शोध साहित्य की समीक्षा के माध्यम से शोधकर्ता यह जान सकता है कि संबंधित क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है और कौन से पहलू अभी भी अछूते हैं। चूंकि प्रस्तुत अध्ययन पढार आदिम जनजाति के छात्रोकी शिक्षा की स्थिति पर केंद्रित है इसलिए जनजातीय शिक्षा के संदर्भ में हुए मुख्य शोधों की समीक्षा निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत की गई है

- **नायक ठाकुरभाई**

पढार नलकांठा की एक आदिम जनजाति ;मानवशास्त्रीय अध्ययन

आदिजाति अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान गुजरात विद्यापीठ अहमदाबाद।

नायक ने नलकांठा क्षेत्र में रहने वाली पढार अनुसूचित जनजाति का विस्तृत मानवशास्त्रीय अध्ययन किया था। उनके शोध के दौरान यह पाया गया कि इस आदिम समूह में साक्षरता दर अत्यंत चिंताजनक स्तर पर यानी मात्र 11.08 प्रतिशत ही थी। यह अध्ययन सिद्ध करता है कि पढार समुदाय दशकों से शैक्षणिक पिछड़ेपन का शिकार रहा है और उनकी पारंपरिक जीवन शैली शिक्षा के विकास में बाधक बन रही है।

- **भट्ट नानक**

नलकांठा के पढार छात्र के विकास की समस्याएं और संभावनाएं

गुजरात साहित्य अकादमी और यूनिवर्सिटी ग्रंथ निर्माण बोर्ड अहमदाबाद।

नानक भट्ट ने नलकांठा के छात्र के विकास की समस्याओं और भविष्य की संभावनाओं पर चर्चा की है। उनके शोध में यह चौंकाने वाला निष्कर्ष सामने आया कि इस समुदाय में 94.10 प्रतिशत महिलाएं पूरी तरह से निरक्षर हैं। इस निरक्षरता के कारण पढार परिवारों में जन्म और मृत्यु दर उच्च देखी गई जो यह दर्शाती है कि शिक्षा का अभाव सीधे तौर पर स्वास्थ्य और जनसंख्या की समस्याओं से जुड़ा हुआ है।

- **जगाणी हितेश एन**

पढार जनजाति में विकास कार्यक्रम और सामाजिक परिवर्तन

समाजशास्त्र भवन सौराष्ट्र विश्वविद्यालय राजकोट ;पीएचडी शोधप्रबंध।

उन्होंने पढार जनजाति के लिए सरकारी विकास कार्यक्रमों और उनके कारण आए सामाजिक परिवर्तन का गहन अध्ययन किया था। उनके अध्ययन काल के दौरान पढार आदिम समूह में साक्षरता दर 29.03 प्रतिशत दर्ज की गई थी। यह अध्ययन दर्शाता है कि सरकारी प्रयासों से साक्षरता में धीरे.धीरे सुधार हो रहा है लेकिन यह अभी भी राष्ट्रीय औसत से काफी पीछे है।

- **चौरसिया एस**

पिछड़ी आदिजाति में शिक्षा और जागरूकता बैगा जनजाति का विशेष संदर्भ

सार्वजनिक प्रकाशन नई दिल्ली।

चौरसिया ने विशेष रूप से पिछड़ी जनजाति बैगा के संदर्भ में अध्ययन किया था जिसके निष्कर्ष पढार जनजाति पर भी लागू होते हैं। उनके अनुसार शिक्षा के निम्न स्तर का मुख्य कारण अज्ञानता है। जनजातीय माता.पिता छात्रोको स्कूल भेजने के बजाय तत्काल आर्थिक सहायता प्राप्त करने के लिए खेती के काम मवेशी चराने और छोटे भाई.बहनों की देखभाल करने जैसे कामों में लगा देते हैं। यहाँ बाल श्रम और शिक्षा के बीच का संघर्ष स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

- **चौधरी आर**

जनजातीय गांवों में प्राथमिक शिक्षाः मान्यता और वास्तविकता

जर्नल ऑफ ट्राइबल स्टडीज मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमीए भोपाल।

उन्होंने मध्य प्रदेश के जनजातीय क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा की मान्यता और वास्तविकता के बीच के अंतर को प्रस्तुत किया है। उनके अध्ययन के अनुसार राष्ट्रीय स्तर पर जनजातीय शिक्षा 22 प्रतिशत और राज्य स्तर पर 31 से 41 प्रतिशत तक देखी गई है। उन्होंने जनजातीय शिक्षा की वास्तविक स्थिति और स्कूलों की भौतिक स्थिति का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है।

जनजातीय छात्र की शिक्षा के संबंध में राष्ट्रीय स्तर पर हुए अध्ययन दर्शाते हैं कि भौगोलिक विविधता और आर्थिक पिछड़ापन शिक्षा के मार्ग में सबसे बड़ी बाधाएँ हैं। पढार जनजाति के बारे में पूर्व में हुए नृवंशविज्ञान अध्ययन मुख्य रूप से उनके सांस्कृतिक पहलुओं लोक नृत्यों और नलसरोवर के साथ उनके संबंधों पर केंद्रित रहे हैं। इस समुदाय में शिक्षा की निम्न दर और ड्रॉप.आउट की समस्याओं व प्रश्नों के बारे में कोई व्यवस्थित समाजशास्त्रीय अध्ययन नहीं हुआ है इसीलिए प्रस्तुत विषय का चयन किया गया है।

शोध कार्यप्रणाली

प्रस्तुत अध्ययन में शोध कार्यप्रणाली निम्नलिखित प्रकार से है

शोध प्रारूप

प्रस्तुत अध्ययन छात्रोकी शिक्षा की स्थिति और उनकी समस्याओं पर आधारित है। इसमें पढार जनजाति में शिक्षा के निम्न स्तर के पीछे क्या कारण हैं और शिक्षा की वर्तमान स्थिति कैसी है इसका विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जाएगा। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन **वर्णनात्मक शोध प्रारूप पर आधारित है।**

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में अध्ययन पद्धति को तीन भागों में विभाजित किया गया है

1. अध्ययन की जनसंख्या प्रस्तुत अध्ययन गुजरात राज्य के सुरेंद्रनगर और अहमदाबाद जिलों के संदर्भ में है। यह पढार जनजातीय समुदाय इन दो जिलों के पंद्रह गांवों में निवास करता है। इसमें अहमदाबाद जिले के बावला तालुका का शियाल धरजी देवथल वीरमगाम तालुका का शाहपुर धंधुका तालुका का खास्ता और दसक्रोई दसकोई शामिल हैं। इसके अलावा सुरेंद्रनगर जिले के कमोद गांव में और लिमडी तालुका के नानी काठेची राणागढ़ पराली परनाला गेडी रणोल जशमतपर और आनंदपर गांवों में यह समुदाय रहता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार पढार जनजाति की कुल जनसंख्या 30,932 है जिसमें पुरुष 15,911 और

महिलाएँ 15,021 हैं। लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुषों पर 944 महिलाएँ है और उनकी साक्षरता दर 40.96 प्रतिशत है।

2. अध्ययन का प्रतिदर्श अध्ययन के अंतर्गत आने वाले जिलों में से गांवों का चयन इस प्रकार किया गया है जैसे कि शियाल धरजी देवथल बावला शाहपुर खास्ता कमोद नानी काठेची राणागढ़ परली परनाला गेडी रणोल जशमतपर और आनंदपर सहित कुल 15 गांवों में पढार जनजाति के 5,566 परिवार निवास करते हैं। इन सभी परिवारों को अध्ययन के प्रतिदर्श क्षेत्र में शामिल किया गया है। इन 5,566 परिवारों में से 10% परिवार यानी 556 परिवारों को यादृच्छिक प्रतिदर्श पद्धति द्वारा अध्ययन के नमूने के रूप में चुना जाएगा। परिवार के मुखिया को उत्तरदाता सूचनादाता के रूप में चुना गया है।

3. आंकड़े एकत्र करने की पद्धतियां और प्रविधियां प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़े एकत्र करने के लिए विभिन्न पद्धतियों जैसे कि साक्षात्कार अनुसूची और अवलोकन पद्धति द्वारा आकस्मिक रूप से चयनित उत्तरदाताओं से सीधे संपर्क करके प्राथमिक आंकड़े एकत्र किए गए हैं। साथ ही प्राथमिक विद्यालय के छात्रोके शिक्षा के स्तर और प्रश्नावली के माध्यम से स्कूल आने के प्रति उनकी जिज्ञासा से संबंधित जानकारी एकत्र करने का प्रयास किया जाएगा।

अध्ययन से संबंधित तस्वीरें चित्र और अन्य द्वितीयक आंकड़े एकत्र करने का प्रयास भी किया जाएगा। इसके अतिरिक्त अध्ययन में प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों का वर्गीकरण करने के बाद उन्हें कंप्यूटर एक्सेल में सारणीबद्ध किया जाएगा। तत्पश्चात तालिकाएँ बनाकर सांख्यिकीय तकनीकों जैसे कि माध्य बहुलक और प्रतिशत आदि का उपयोग करके आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है।

परिणाम और चर्चा

आर्थिक स्थिति

पढार समुदाय की आर्थिक स्थिति उनकी भौगोलिक स्थिरता और भौतिक संसाधनों के अभाव वंचितता के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। इस समुदाय में रोजगार कामकाज के दिनों की कम संख्या और मजदूरी दरों में व्याप्त असमानता उनके निम्न जीवन स्तर के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है। इसके अतिरिक्त मिट्टी के काम और निर्माण मजदूरी के क्षेत्र में वचेटियाों द्वारा किया जाने वाला शोषण और पूंजी निवेश की क्षमता का अभाव इस जनजातीय समुदाय को आर्थिक विकास की मुख्यधारा से अलग रखता है। इस प्रकार पढार समुदाय का आर्थिक पिछड़ापन केवल आय की कमी नहीं है बल्कि अवसरों और संसाधनों पर कमजोर नियंत्रण का परिणाम है।

तालिका - 1.1 चयनित 15 गांवों के 557 परिवारों की वार्षिक आय का विश्लेषण

क्र. सं.	गांव का नाम	चयनित परिवार	कृषि एवं पशुपालन से आय (%)	मजदूरी से होने वाली आय (%)	कुल आय (%)
1	राणगढ़	54	8.50%	91.50%	100%
2	नानी काठेची	43	3.17%	96.83%	100%
3	धरजी	48	21.44%	78.56%	100%
4	शियाल	41	7.20%	92.80%	100%
5	शाहपुर	29	6.73%	93.27%	100%
6	खास्ता	21	9.00%	91.00%	100%
7	रणोल	22	6.13%	93.87%	100%
8	कमोड	18	5.50%	94.50%	100%
9	पराली	15	10.20%	89.80%	100%
10	देवदथल	10	4.80%	95.20%	100%
11	बावला	14	12.00%	88.00%	100%
12	परनाला	8	7.50%	92.50%	100%
13	जसमतपर	6	5.00%	95.00%	100%
14	आनंदपर	3	4.00%	96.00%	100%
15	गेडी	2	3.50%	96.50%	100%
	कुल	**15 गांव**	**557**	**औसत 8.76%**	**औसत 91.24%**

आर्थिक स्थिति का विश्लेषण और चर्चा

उपरोक्त चयनित 15 गांवों के 557 पढार परिवारों की आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करने पर एक अत्यंत चिंताजनक चित्र स्पष्ट होता है। समग्र समुदाय की कुल वार्षिक आय का 91.24% हिस्सा केवल शारीरिक मजदूरी से आता है जबकि कृषि और पशुपालन जैसे स्थायी व्यवसायों का योगदान मात्र 8.76% तक ही सीमित है। ये आंकड़े सिद्ध करते हैं कि पढार जनजातीय समुदाय आर्थिक रूप से पूरी तरह से असंगठित क्षेत्र की मजदूरी पर निर्भर है।

इस जानकारी के आधार पर यह कहा जा सकता है कि इस आर्थिक पिछड़ेपन के पीछे भौगोलिक और ढांचागत कारण जिम्मेदार हैं। नलकांठा क्षेत्र में भूमि लवणीय क्षारयुक्त होने के कारण कृषि से उचित लाभ नहीं मिल पाता जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश परिवार भूमिहीन हैं या सीमांत किसान हैं। मजदूरी

पर यह अत्यधिक निर्भरता उन्हें मौसमी बेरोजगारी की ओर धकेलती है क्योंकि वर्ष में औसतन केवल 125 से 150 दिन ही उन्हें पर्याप्त काम मिल पाता है। नानी काठेची आनंदपर और गेडी जैसे गांवों में मजदूरी का प्रमाण 96% से अधिक होना इस समुदाय की आर्थिक लाचारी और संसाधनों की शून्यता का प्रबल सूचक है। इस प्रकारए पढार समुदाय में व्याप्त आर्थिक पिछड़ापन केवल आय की कमी नहीं है बल्कि पीढ़ियों से चले आ रहे वंचना के चक्र का परिणाम है जो छात्रोकी शिक्षा को सीधे तौर पर प्रभावित करता है।

शिक्षा और आर्थिक स्थिति का अंतसंबंध

उपरोक्त जानकारी की विवेचना करने से ज्ञात होता है कि पढार समुदाय में आर्थिक पिछड़ापन और शिक्षा की दयनीय स्थिति दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू जैसे हैं। पढार समुदाय के अधिकांश लोग भूमिहीन मजदूर हैं या छोटे पैमाने पर पारंपरिक मछली पकड़ने और मिट्टी के काम पर निर्भर हैं। उनकी दैनिक आय अत्यंत सीमित और अनिश्चित है जिसके कारण परिवार की प्राथमिक आवश्यकताओं जैसे कि भोजन और वस्त्र को पूरा करना ही एक बड़ा संघर्ष बन जाता है।

ऐसी स्थिति में शिक्षा पर होने वाला अप्रत्यक्ष खर्च जैसे कि कपड़े स्टेशनरी और परिवहन खर्च अभिभावकों मातापिता के लिए एक आर्थिक बोझ बन जाता है। परिणामस्वरूप छोटी उम्र के छात्र भी आर्थिक उपार्जन कमानी की प्रक्रिया में शामिल हो जाते हैं। नलसरोवर में पर्यटकों के मौसम के दौरान नावें चलाना मछलियाँ पकड़ना या वनोपज और कंदमूल बीड़ खोदकर बाजार में बेचना जैसे श्रम कार्यों में छात्रे सक्रिय बाल श्रमिक के रूप में भाग लेते हैं।

यह त्वरित वित्तीय लाभ अभिभावकों को अधिक आकर्षक लगता है क्योंकि शिक्षा के आर्थिक लाभ दीर्घकालिक और अनिश्चित होते हैं। गरीबी के कारण पढार परिवार छात्रोको लंबे समय तक पढ़ाने का जोखिम नहीं उठा सकते जिससे अज्ञानता और आर्थिक लाचारी का एक ऐसा दुष्चक्र विषाक्त चक्र निर्मित होता है जो नई पीढ़ी को भी मजदूरी की ओर ही धकेलता है।

परिवार के छात्रोका बीच में ही स्कूल छोड़ना ;ड्रॉप.आउट दर

समग्र भारत में छात्र में बीच में ही स्कूल छोड़ने की दर ड्रॉपआउट रेट में पिछले कुछ वर्षों में काफी सुधार हुआ है। शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार के हालिया आधिकारिक आंकड़ों (UDISE+) के अनुसार राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिक स्तर कक्षा 1-5) पर ड्रॉप.आउट दर लगभग 1.5% से 2% के आसपास हैए जबकि माध्यमिक स्तर कक्षा 9-10) पर यह दर लगभग 12.6% दर्ज की गई है। इसके विपरीत यदि जनजातीय समुदाय (ST) के छात्र की बात की जाएए तो सामाजिक.आर्थिक कारणों से उनके बीच यह दर राष्ट्रीय औसत से अधिक है जहाँ माध्यमिक स्तर कक्षा 9-10) तक पहुँचते.पहुँचते जनजातीय छात्रोकी ड्रॉपआउट दर लगभग 18% से 19% तक पहुँच जाती है। इन्हीं प्रामाणिक तथ्यों को आधार मानकर शोधकर्ता ने

उत्तरदाताओं के परिवार के छात्रोद्वारा किस.किस कक्षा स्तर में स्कूल छोड़ा जाता हैए यह जानने का प्रयास किया है। प्राप्त जानकारी का वर्गीकरण निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

तालिका - 1.2: छात्रोद्वारा बीच में ही स्कूल छोड़ने (ड्रॉप-आउट) का कक्षा-वार विवरण

क्र. सं.	स्कूल छोड़ने की कक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
1	कक्षा 1	21	3.78%
2	कक्षा 2	17	3.06%
3	कक्षा 3	39	7.01%
4	कक्षा 4	66	11.87%
5	कक्षा 5	56	10.07%
6	कक्षा 6	51	9.17%
7	कक्षा 7	64	11.51%
8	कक्षा 8	118	21.22%
9	कक्षा 9	22	3.96%
10	कक्षा 10	3	0.54%
	कुल (Total)	**457**	**82.19%**

तालिका का विश्लेषण और विवेचना

उपरोक्त तालिका के वर्गीकरण से यह स्पष्ट होता है कि बीच में ही स्कूल छोड़ने वाले छात्रोमें सर्वाधिक संख्या 21.22% (118 छात्रे कक्षा 8 में है। इसके बाद क्रमशः कक्षा 4 में 11.87% (66 छात्रे), कक्षा 7 में 11.51% (64 छात्रे), कक्षा 5 में 10.07% (56 छात्रे), कक्षा 6 में 9.17% (51 छात्रे) और कक्षा 3 में 7.01% (39 छात्रे) शामिल हैं। इसके अतिरिक्त प्राथमिक स्तर की शुरुआती कक्षाओं जैसे कि कक्षा 1 में 3.78% (21 छात्रे) और कक्षा 2 में 3.06% (17 छात्रे) तथा माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 में 3.96% (22 छात्रे) एवं कक्षा 10 में 0.54% (3 छात्रे) शिक्षा छोड़ चुके हैं। सर्वेक्षण के दौरान उत्तरदाताओं से व्यक्तिगत साक्षात्कार रूबरू मुलाकात में यह तथ्य सामने आया कि उनके परिवारों के स्कूल जाने योग्य कुल 870 सदस्यों में से एक बड़ा हिस्सा ;लगभग 52.5%) औपचारिक शिक्षा से दूर हो चुका है या बीच में ही पढ़ाई छोड़ चुका है।

उपरोक्त आंकड़ों के समग्र विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि अध्ययन के अंतर्गत आने वाले परिवारों के छात्रोमें प्राथमिक स्तर (कक्षा 1-5) तक ड्रॉप-आउट दर लगभग 25.7% है, जो उच्च प्राथमिक

स्तर (कक्षा 1-8) तक पहुँचते-पहुँचते तीव्र गति से बढ़कर लगभग 87.6% हो जाती है और माध्यमिक स्तर (कक्षा 1-10) तक यह दर 95.5% से भी अधिक दर्ज की गई है।

छात्रोमें बीच में ही स्कूल छोड़ने ड्रॉप.आउट की इस अत्यधिक उच्च दर के पीछे मुख्य कारण यह पाया गया है कि उनके माता.पिता स्वयं अशिक्षित हैं जिसके कारण उनमें छात्रोकी शिक्षा के प्रति जागरूकता का सर्वथा अभाव है। इसके साथ ही गाँवों में उपयुक्त शैक्षणिक वातावरण न होने के कारण शोधकर्ता ने अपने अवलोकन के दौरान पाया कि अधिकांश छात्रे खेल.कूद में मित्रों के साथ घूमने में तथा मोबाइल पर श्रील्सश देखने में अपना समय व्यतीत करते हैं।

इसके अलावा पढ़ाई की तुलना में घरेलू काम.काज को अधिक महत्व देना तथा कम उम्र में विवाह कर देना भी इसके मुख्य कारणों में शामिल है। विशेष रूप से पढार समुदाय के युवक युवतियों में यह विशिष्ट प्रवृत्ति देखी गई है कि वे कम उम्र में ही 'पलायन विवाह' (भागकर शादी करना कर लेते हैंए जिसका प्रमाण प्रत्येक गाँव में लगभग 60% के आसपास पाया गया है। यह सामाजिक कुप्रथा विशेषकर युवतियों में शिक्षा के ड्रॉपआउट दर को बढ़ाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

उत्तरदाताओं के छात्रोके स्कूल छोड़ने के मुख्य कारण

शिक्षा किसी भी समाज के विकास अथवा परिवर्तन का मुख्य आधार है। प्रस्तुत अध्ययन में उत्तरदाताओं के छात्रोके स्कूल न जाने या बीच में ही पढ़ाई छोड़ देने के लिए कौन.कौन से कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैंए इसकी जांच करने का प्रयास निम्नलिखित तालिका में किया गया है।

तालिका - 1.3: उत्तरदाताओं के छात्रोके स्कूल छोड़ने के मुख्य कारणों का विवरण

क्र. सं.	स्कूल छोड़ने के मुख्य कारण	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
1	आर्थिक कठिनाई (गरीबी)	127	36.81%
2	पिछली परीक्षा में अनुत्तीर्ण (फेल) होना	24	6.96%
3	मिट्टी के काम (मिट्टी शिल्प) / मछली पकड़ने में शामिल होना	79	22.90%
4	विवाह / कम उम्र में सगाई	32	9.27%
5	प्रवासन (Migration/स्थलांतरण)	67	19.42%
6	अन्य (आधुनिक फैशन, मौज-मस्ती आदि)	16	4.64%
	कुल (Total)	**345**	**100.00%**

उपरोक्त तालिका से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सर्वाधिक (36.81%) उत्तरदाताओं के अनुसार आर्थिक स्थिति और गरीबी' छात्रोके स्कूल छोड़ने का मुख्य कारण है। इसके अतिरिक्त, मिट्टी का काम

(मिट्टी शिल्प) तथा मछली पकड़ने की गतिविधियों में छात्रोका संलग्न होना (22.90%), मौसमी प्रवासन (19.42%) और 10 से 15 वर्ष की कम उम्र में सगाई या विवाह की सामाजिक प्रथा (9.27%) स्कूल छोड़ने के लिए उत्तरदायी प्रमुख कारणों के रूप में सामने आए हैं।

इस मात्रात्मक डेटा के गहन विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि प्रस्तुत अध्ययन में लगभग एक-तिहाई उत्तरदाताओं की कमज़ोर आर्थिक स्थिति अत्यधिक गरीबी बेरोजगारी परिवार के सदस्यों की अधिक संख्या सामाजिक अवसरों विवाह प्रसंग आदि पर होने वाले अनावश्यक खर्च प्रवासन मछली पकड़ने और मिट्टी के काम जैसे पारंपरिक व्यवसायों से होने वाली अत्यंत अल्प आय परिवार के सदस्यों में व्यसन नशाखोरी का अत्यधिक प्रमाण घरेलू कलह और आपसी संघर्ष कम उम्र में लड़कियों के भाग जाने पलायन विवाह की समस्या तथा छोटी आयु में मोबाइल फोन का अत्यधिक उपयोग जैसे कारक छात्रोके स्कूल छोड़ने के मुख्य कारण हैं। ये सभी तथ्य पढार जनजातीय समुदाय के क्षेत्रकार्य और प्रत्यक्ष साक्षात्कार के दौरान प्रमुखता से देखे गए हैं।

विशेष रूप से ये परिणाम पढार समुदाय में शिक्षा की दयनीय स्थिति के पीछे के वास्तविक कारणों पर प्रकाश डालते हैं जो अभिभावकों को छात्रोकी शिक्षा का खर्च उठाने से रोकते हैं। छात्रे नलसरोवर में मछली पकड़ने अथवा मिट्टी शिल्प के शारीरिक श्रम में शामिल हो जाने के कारण स्कूल छोड़ देते हैं। इसके अतिरिक्त आजीविका के लिए होने वाला मौसमी प्रवासन और 10 से 15 वर्ष की अल्पायु में सगाई या विवाह कर देने की प्रथा भी इसके लिए समान रूप से जिम्मेदार है। क्षेत्रकार्य के दौरान यह भी दर्ज किया गया कि आधुनिक फैशन या मनोरंजन जैसे मोबाइल रील्स आदि) के प्रति बढ़ते आकर्षण के कारण युवा पढ़ने के बजाय त्वरित मजदूरी की ओर आकर्षित होते हैं। इस प्रकारए इस समुदाय में आर्थिक और सामाजिक मजबूरियां शिक्षा पर सीधे तौर पर हावी होती दिखाई देती हैं।

किसी भी शैक्षणिक व्यवस्था की सफलता का एक बहुत बड़ा आधार अभिभावकों माता.पिता की वैचारिक परिपक्वता और उनके सकारात्मक दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। परंतु पढार समुदाय में शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण अधिकांशतः नकारात्मक देखने को मिलता है। स्वयं निरक्षर होने के कारण ये अभिभावक शिक्षा के सामाजिक और बौद्धिक मूल्य को समझने में असमर्थ हैं। उनके मतानुसार यदि पढ़ाई पूरी करने के बाद भी अंततः मजदूरी ही करनी हैए तो शिक्षा के पीछे कई वर्ष व्यर्थ करने का कोई औचित्य नहीं है।

लड़कियों की शिक्षा के संदर्भ में अभिभावकों का दृष्टिकोण और भी अधिक रूढ़िवादी है उनका मानना है कि महिलाओं का कार्यक्षेत्र केवल घरेलू कामकाज और छात्रोके पालनपोषण तक ही सीमित हैए इसलिए उन्हें स्कूल भेजना केवल समय की बर्बादी है।

क्षेत्रकार्य के दौरान यह तथ्य भी प्रखरता से उभरकर सामने आया कि अभिभावक अपने छात्रोकी स्कूली गतिविधियोंए जैसे कि गृहकार्य पूरा करना या विद्यालय में उनकी उपस्थिति आदि के विषय में कभी भी स्कूल जाकर जानकारी नहीं लेते और न ही शिक्षकों के साथ कोई संवाद स्थापित करते हैं। अभिभावकों में अपनी जाति.पंचायत जाति पंच के नियमों का पालन करने की जितनी उत्सुकता और निष्ठा दिखाई देती है वैसी उत्सुकता छात्रोके शैक्षणिक विकास के प्रति बिल्कुल नहीं दिखाई देती। अभिभावकों की यही शैक्षणिक निष्क्रियता और जागरूकता का अभाव पढार समाज की नई पीढ़ी के शैक्षणिक विकास के मार्ग में सबसे बड़ा अवरोध बना हुआ है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह सामने आया है कि इस समुदाय के आर्थिक पिछड़ेपन के पीछे भौगोलिक और ढांचागत कारण जिम्मेदार हैं। नलकांठा क्षेत्र में भूमि लवणीय क्षारयुक्त होने के कारण कृषि से उचित लाभ नहीं मिल पाता जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश (91.24%) परिवार भूमिहीन हैं या सीमांत किसान हैं। मजदूरी पर यह अत्यधिक निर्भरता उन्हें मौसमी बेरोजगारी की ओर धकेलती हैए क्योंकि वर्ष में औसतन केवल 125 से 150 दिन ही उन्हें पर्याप्त काम मिल पाता है। नानी काठेचीए आनंदपर और गेडी जैसे गांवों में मजदूरी का प्रमाण 96% से अधिक होना इस समुदाय की आर्थिक लाचारी और संसाधनों की शून्यता का प्रबल सूचक है। इस प्रकार पढार समुदाय में व्याप्त आर्थिक पिछड़ापन केवल आय की कमी नहीं हैए बल्कि पीढ़ियों से चले आ रहे वंचना के चक्र का परिणाम है जो छात्रोकी शिक्षा को प्रभावित करने वाला एक सबसे महत्वपूर्ण कारक है।

इस अध्ययन का एक अन्य उल्लेखनीय निष्कर्ष यह रहा कि पढार जनजातीय छात्र में बीच में ही स्कूल छोड़ने (ड्रॉप-आउट) की संख्या बहुत अधिक है। यहाँ प्राथमिक स्तर (कक्षा 1-5) तक ड्रॉप- दर 28%, उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा 1-8) तक 89% तथा माध्यमिक स्तर (कक्षा 1-10) तक पहुँचते-पहुँचते 95.5% छात्रे बीच में ही स्कूल छोड़ देते हैं। छात्र में ड्रॉपआउट की यह उच्च दर होने के पीछे मुख्य कारण यह पाया गया है कि उनके माता.पिता स्वयं अशिक्षित हैं जिसके कारण उनमें छात्रोकी शिक्षा के प्रति जागरूकता का सर्वथा अभाव है। इसी प्रकार गांवों में उपयुक्त शैक्षणिक वातावरण न होने के कारण शोधकर्ता ने अपने अवलोकन के दौरान पाया कि अधिकांश छात्रे खेलकूद में मित्रों के साथ घूमने में तथा मोबाइल पर 'रील्स' देखने में अपना समय व्यतीत करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत आने वाले बहुसंख्यक (75%) उत्तरदाताओं की कमजोर आर्थिक स्थिति गरीबी बेरोजगारी परिवार के सदस्यों की अधिक संख्या सामाजिक अवसरों पर होने वाले अनावश्यक खर्च मौसमी प्रवासन मछली पकड़ने और मिट्टी के काम जैसे पारंपरिक व्यवसायों से होने वाली अत्यंत अल्प आय परिवार के सदस्यों में व्यसन का अत्यधिक प्रमाण कम उम्र में लड़कियों के भाग जाने पलायन विवाह

की समस्या तथा छोटी आयु में मोबाइल फोन का अत्यधिक उपयोग जैसे कारक छात्रोके स्कूल छोड़ने के मुख्य कारणों के रूप में क्षेत्रकार्य और प्रत्यक्ष साक्षात्कार के दौरान प्रमुखता से देखे गए हैं।

इसके अतिरिक्त पढार समुदाय में शिक्षा के प्रति अभिभावकों मातापिता का दृष्टिकोण अधिकांशतः 80% नकारात्मक देखने को मिलता है। इसका मुख्य कारण यह है कि छात्रोसे छोटे भाईबहनों की देखभाल करवाना खाना बनवाना और अन्य घरेलू कामकाज करवाना जैसे कारक उत्तरदायी हैं जिसके परिणामस्वरूप छात्रे विद्यालय नहीं जा पाते हैं।

सुझाव

उपरोक्त विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अध्ययन के अंतर्गत आने वाले पढार जनजातीय समुदाय में शिक्षा के स्तर में कुछ हद तक सुधार हुआ माना जा सकता है क्योंकि आज पढार गांवों के कुछ परिवारों के छात्रे छात्रावासों में रहकर पढ़ाई कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप ये छात्रे कक्षा 8 से 12वीं तक की शिक्षा पूरी कर लेते हैं परंतु आज भी ऐसी संख्या अत्यंत न्यून कम है। अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर उनके शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए निम्नलिखित बिंदु प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं

ड्रॉप.आउट दर को नियंत्रित करना और शिक्षकों की भूमिका

पढार जनजातीय छात्रोमें सबसे बड़ी चुनौती बीच में ही स्कूल छोड़ देने ड्रॉपआउट की है क्योंकि कक्षा 1 से 10वीं तक लगभग 64% छात्रे स्कूल छोड़ देते हैं। यदि इन छात्रोमें स्कूल छोड़ने की दर को नियंत्रित कर लिया जाए तो उनके शैक्षणिक विकास के स्तर को तीव्र गति से बढ़ाया जा सकता है। ड्रॉपआउट दर को कम करने के लिए स्थानीय स्तर पर नियुक्त शिक्षकों को एक नई जिम्मेदारी दी जानी चाहिए जिसके अंतर्गत शिक्षक निरंतर प्रत्येक अभिभावक मातापिता से संपर्क कर उन्हें शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करें। जब अभिभावक छात्रोकी शिक्षा के प्रति जागरूक होंगे तब छात्रोमें स्कूल छोड़ने की यह प्रवृत्ति कम होगी इस कार्य को विद्यालय की नियमित गतिविधियों के एक भाग के रूप में जोड़ा जाना चाहिए। शिक्षकों द्वारा यह कार्य सुचारू रूप से किया जा रहा है या नहीं इसकी निगरानी सरपंच और एस.एम.सी. (SMC - स्कूल मैनेजमेंट कमेटी द्वारा समयसमय पर जांच करके की जाए तो ड्रॉपआउट दर में निश्चित रूप से कमी आने की संभावना है।

पाठ्यक्रम में बदलाव और आकर्षण

ड्रॉप.आउट दर को कम करने के लिए पाठ्यक्रम में पढार जनजातीय समुदाय के विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक पहलुओं को शामिल करके उसे अधिक आकर्षक बनाना चाहिए ताकि विद्यालय

छात्रोको अपनी ओर आकर्षित कर सके। इसके लिए पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों में आवश्यक बदलाव करने पर विचार किया जाना चाहिए।

बाल विवाह और पलायन विवाह पर रोक

पढार परिवारों में शिक्षा के मार्ग में एक मुख्य चुनौती कम उम्र में विवाह की प्रचलित प्रथा है। इसमें 12 से 18 वर्ष की आयु के लड़के.लड़कियों का विवाह करा दिया जाता है अथवा वे पलायन विवाह भागकर शादी कर लेते हैं। इसके कारण अधिकांश अध्ययन लड़के और लड़कियाँ विवाह के बंधनों में बंधकर स्कूल छोड़ देते हैं। इस कुप्रथा को रोकने के लिए अभिभावकों को इसके गंभीर दुष्परिणामों के बारे में विस्तार से समझाना होगा।

यदि उपरोक्त सुझावों के आधार पर शैक्षणिक कार्य क्रियान्वित किया जाएए तो निश्चित रूप से पढार परिवारों के शिक्षा के स्तर में व्यापक परिवर्तन देखने को मिलेगा और साथ ही उनके जीवन के अन्य सामाजिक.आर्थिक पहलुओं में भी गुणात्मक सुधार हो सकेगा।

संदर्भ सूची

1. Enthoven, R. E. (1922). *The Tribes and Castes of Bombay* (Vol. 3, p. 252). Government Central Press.
2. Lal, R. B. (1985). *The Padhars of Nalkantha: A Socio-Economic Study of a Vulnerable Tribe.* Tribal Research and Training Institute, Gujarat Vidyapith.
3. Ministry of Tribal Affairs. (2014). *Report of the High-Level Committee on Socio-Economic, Health and Educational Status of Tribal Communities of India.* Government of India.
4. **आहूजा, राम.** (2001). *रिसर्च मेथड्स* (Research Methods). रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
5. **गुजरात सरकार.** (2020). *गुजरात जनजातीय सर्वसंग्रह.* गुजरात विद्यापीठ प्रकाशन अहमदाबाद।
6. **पंड्या, एन. बी.** (1980). *गुजरात में पढारों के जीवन की बदलती रूपरेखा,* सौराष्ट्र विश्वविद्यालय, राजकोट।
7. પટેલ, કે. એમ. (૨૦૧૫). *નળકાંઠાના પઢારોની આર્થિક ગતિશીલતા: એક સમાજશાસ્ત્રીય અધ્યયન* (પીએચ.ડી. શોધનિબંધ). ગુજરાત યુનિવર્સિટી, અમદાવાદ.

Dr. Rakesh bhedi, Email id: rdbhedi@sauuni.ac.in, m**obile no.:** 7874350502